रजिस्ट्रेशन संख्या :– R.N.I. 36355/79
डाक पंजीकरण संख्या :– Kanpur City – 67/2015–2017

चिकित्सा–विज्ञान और प्रौद्योगिक जगत में सर्वाधिक प्रकाशित होने वाला निष्पक्ष समाचार पत्र

पाक्षिक

इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट

आवश्यक सूचना

समस्त इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सकों को सूचित किया जाता है कि वे अपना ई–मेल आई0डी0 व मोबाईल नं0 कार्यालय को प्रेषित करें ताकि उन्हें नवीनतम सूचनायें E-mail अथवा S.M.S. के माध्यम से भेजी जा सके। रजिस्ट्रार

registrarbehmup@gmail.com

पत्र व्यवहार हेतु पता :– ,
सम्पादक, इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट, 127/204 'एस' जूही, कानपुर–208014

वर्ष –39 ● अंक –20 ● कानपुर 16 से 31 अक्टूबर 2017 ● प्रधान सम्पादक – डा0 एम0 एच0 इदरीसी ● वार्षिक मूल्य – ₹ 100

बदलती परिस्थितियाँ दिशा बदल रही हैं

इलेक्ट्रो होम्योपैथी की दिशा और दशा बदलने हेतु सरकार द्वारा लिये जाने वाले निर्णय का समय धीरे–धीरे नज़दीक आता जा रहा है ऐसी अपेक्षा की जा रही है कि 30 दिसम्बर के बाद भारत सरकार द्वारा इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिये कोई ऐसा निर्णय लिया जायेगा जो इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिये मील का पत्थर साबित होगा परन्तु निर्णय आने के पहले ही हमारे साथियों ने इतनी व्यग्रता दिखा रखी है जो कि पूरी की पूरी धारा को ही बदले दे रहा है जो कुछ भी घटनाक्रम घट रहा है वह पूरे के पूरे परिदृष्य को बदले दे रहा है और इन पूरी घटनाओं को कुछ इस प्रकार प्रसारित किया जा रहा है कि मानों किसी एक संगठन/व्यक्ति को ही भारत सरकार ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिये अधिकृत कर दिया है।

इस प्रकार की बातें और कुछ करें या न करें पर समाज में एक नई सोच को जन्म तो अवश्य ही दे देती हैं और यही सोच कभी न कभी ऐसा वातावरण निर्मित कर देती है जो आने वाले समय में कष्टकारी हो जाती हैं जबकि वस्तुस्थिति से सभी लोग परिचित हैं , भारत सरकार ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी के मैकेनिज़्म के लिये 28 फरवरी, 2017 को एक व्यवस्था तय कर दी है जिसकी की जानकारी हम कई बार अपने जागरुक पाठकों को दे चुके हैं, इस व्यवस्था के अन्तर्गत भारत सरकार ने यह निर्णीत किया है कि भारत में रहने वाला कोई भी ऐसा व्यक्ति जो इलेक्ट्रो होम्योपैथी से सम्बन्ध रखता हो वह वांछित जानकारी सरकार तक प्रेषित कर सकता है, इसके लिये सरकार ने चार चक्र भी निर्धारित किये हैं यह चक्र हैं क्रमशः 30 मार्च, 30 जून, 30 सितम्बर एवं 30 दिसम्बर। अभी तो केवल तीन चक्रों का समय ही पूरा हुआ है चौथे चक्र के लिये अभी तीन महीने का समय शेष है ऐसे सरकार कोई पूर्व में कोई निर्णय ले ले तो यह समझ से परे है।

अभी बहुत सारे ऐसे संगठन हैं जो प्रपोज़ल के माध्यम से सरकार को जानकारियां देना चाहते हैं, पता नहीं कौन सी जानकारी सरकार के काम की हो जो महीनों से अपनी दावेदारी ठोंक रहे हैं उनके स्थान पर कोई नया बाज़ी न मार ले जाये, ऐसी दशा में कि सी के नियुक्ति या मनोनयन की बात उछालना कहाँ तक तर्क संगत है ?दूसरा विचार जो आज कल बड़ी तेज़ी से फैलाया जा रहा है कि सरकार ने 25 लाख प्रैक्टिस कर रहे इलेक्ट्रो होम्योपैथों की सूची मांगी है, इसके लिये बाकायदा जिन लोगों द्वारा यह बात फैलाई जा रही है, एक फार्म भी दिखाया जा रहा है और कहा जा रहा है कि इसी फार्म को भरकर चिकित्सक उन तक भेजें क्योंकि सरकार ने उन्हें ही डाटा भेजने के लिये अधिकृत कर रखा है।

- ✓ 21 जून ही है एडवाइज़री
- ✓ इसे लागू होना आवश्यक
- ✓ राज्य ही हैं सर्वोपरि
- ✓ इहमाई ने डाला दबाव
- ✓ एडवाइज़री ही विकल्प
- ✓ संकल्प हों पूरे

एक संगठन ने तो हद ही कर दी आनन फानन में एक प्रपोज़्ड काउन्सिल की घोषणा तक कर दी है एवं सोशल मीडिया के माध्यम से पूरे ज़ोर शोर से इसका भरपूर प्रचार भी किया जा रहा है, इसका प्रभाव यह पड़ रहा है कि चिकित्सक अब भ्रमित होने लगा है और वह यह सोच नहीं पा रहा है कि किधर जाये ! क्योंकि एक नहीं, दो नहीं, यहां तो अनेकों संगठन यह दावा कर रहे हैं कि चिकित्सकों का डाटा एकत्रित कर सरकार तक भेजने का काम करने के लिये केवल उन्हें ही सरकार द्वारा अधिकृत किया गया है, अब प्रश्न उठता है कि इसमें कौन अधिकृत है ? और कौन नहीं ? इसका उत्तर तो वही दे सकते हैं जो स्वंय को अधिकृत होने का दावा कर रहे हैं।

एक बहुचर्चित संगठन ने अपने अधिकृत होने की पुष्टि के लिये भारत सरकार स्वास्थ्य मंत्रालय का मुहर लगा कागज भी सोशल मीडिया पर डाल रखा है , आपको बताते चलें कि इस कागज़ पर केवल मुहर ही अंकित है कुछ लिखा नहीं है (मुहर–स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग Deptt. of Health Research स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय Ministry of Health & F.W. नई दिल्ली/ New Delhi-01 डैश ज़ीरो वन हाथ से लिखा है) ऐसा प्रतीत होता है कि किसी रद्दी कागज पर लगे मुहर की फोटो डाल कर बताया जा रहा है कि भारत सरकार ने उन्हें ही अधिकृत कर दिया है।

इस प्रकार की घटनायें इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिये किसी भी दशा में हितकारी नहीं हो सकती हैं जिस समूह या जिन लोगों के द्वारा इस तरह की घटनाओं को जन्म दिया जा रहा है, हो सकता है कि कुछ समय के लिए वे सुर्खियों में रहें परन्तु जब वास्तविकता सामने आती है तो उत्तर देना मुश्किल होता है।

समय बदल चुका है लोग जागरूक और बुद्धिमान भी हैं, वे सब समझते हैं परन्तु फिर भी कुछ समय के लिए मन में संशय तो पैदा हो ही जाता है, जो समूह या संगठन चिकित्सकों से सीधे आवाहन कर रहे हैं कि हर चिकित्सक अपना विवरण प्रेषित करे उनको चाहिये कि वह सरकार को ऐसे समूह या संगठनों के नाम दे दें जो शिक्षण व पंजीयन से जुड़े हैं उनकी अपनी वेबसाइटें हैं हर वेबसाइट पर चिकित्सकों का पूरा विवरण अंकित है इससे सरकार की अपेक्षा भी पूरी हो जायेगी और चिकित्सकों का नाम भी पहुँच जायेगा।

हम यह स्वीकारते हैं कि यह संचार का समय है और संचार के क्षेत्र में महत्वपूर्ण क्रान्ति भी हुई है, हर हाथ में मोबाइल भी पहुँच गया है परन्तु हर इलेक्ट्रो होम्योपैथ के पास स्मार्ट फोन हो ऐसा सम्भव नहीं दिखता है, जिन लोगों के पास स्मार्ट फोन हैं भी उनमें से बहुत सारे लोग डाउनलोड या बहुत सारे एप्लीकेशन नहीं जानते।

इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सकों का जो वर्ग है उसमें लगभग 60 प्रतिशत तक 55 से ऊपर की आयु के हैं ऐसे लोग न तो अब ज़्यादा सीखना चाहते हैं और न ही रूचि दिखा रहे हैं, इस तरह से जो व्यवस्थायें रोज़ जन्म ले रही हैं उनसे हमें सावधान रहना होगा और जो कुछ भी सोशल मीडिया पर प्रसारित व प्रचारित किया जाये उसकी सत्यता की परख अपने विवेक से अवश्य करें।

30 दिसम्बर आने में अभी ढाई महीने शेष हैं उसके बाद ही कुछ दिशा बनती दिखायी पड़ेगी।

कार्य ही रेगुलेशन का मापदण्ड

भारत सरकार ने जब से इलेक्ट्रो होम्योपैथी को नियमित करने की दिशा में कार्य करना प्रारम्भ किया है तब से कई बार विषय विशेषज्ञों से भारत सरकार ने यह राय मांगी कि वह कौन–कौन से कारक हो सकते हैं जिनके आधार पर इलेक्ट्रो होम्योपैथी का नियमितिकरण किया जा सकता है, यह कार्य सरकार द्वारा आज से नहीं वर्षों पूर्व प्रारम्भ किया गया था जब इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिये कानून बनाने की मांग उठी और एक व्यक्ति द्वारा दिल्ली हाई कोर्ट में याचिका दायर की गई तब न्यायालय ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विभिन्न क्षेत्रों पर जानकारी प्राप्त करने के बाद जो दिशा निर्देश निर्गत किये उनमें कार्य को ही प्रमुःखता दी गयी है इसके बाद भारत सरकार ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता के लिये एक उच्च स्तरीय समिति का गठन किया।

ढाई वर्षों के चिन्तन के बाद 25 नवम्बर, 2003 को भारत सरकार द्वारा गठित उस समिति ने जो रिपोर्ट दी उस रिपोर्ट में मुख्य बिन्दु कार्य ही था, कमेटी ने जिन मापदण्डों का उल्लेख किया था उनमें कार्य क्षमता व पैथी की उपयोगिता पर गम्भीर टिप्पणी की है, अभी 28 फरवरी, 2017 को भारत सरकार ने मैकेनिज़्म के लिये जो कमेटी गठित करने की बात की है और कमेटी द्वारा जिन बिन्दुओं पर विशेष ध्यान देना है वह बिन्दु हैं पद्धति के Safety और viavlity यह दोनों के दोनों बिन्दु तभी प्रमाणिक हो सकते हैं जब कार्य किया जाये, हमारे चिकित्सक रोगी की चिकित्सा करें रोगी को

शेष अंतिम पेज पर

रोशनी की तलाश में

प्रकाश का जीवन में बहुत महत्व है, बिना प्रकाश जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती, प्रकाश की एक किरण घनघोर अंधेरे को चीर कर अपनी उपस्थिति बता देती है। किसी कवि ने कहा है कि अंधकार की सीमा में ही स्वागत पाता है प्रकाश परन्तु वास्तविक संदर्भों में प्रकाश की प्रतीक्षा हर व्यक्ति को रहती है। " इलेक्ट्रो होम्योपैथ भी अपने जीवन में प्रकाश चाहते हैं "।

इसी प्रकाश की चाहत में हम और हमारे इलेक्ट्रो होम्योपैथ साथी वर्षों से संघर्षरत हैं परन्तु जिस प्रकाश की अपेक्षा हमें है वह दूर–दूर तक नज़र नहीं आता है, ऐसा नहीं है कि हम घनघोर तिमिर में जी रहे हों परन्तु जितनी रोशनी हम तक आ रही है वह वर्तमान परिस्थितियों में काफ़ी नहीं है, क्योंकि जिस तरह का प्रकाश अन्य प्रचलित चिकित्सा पद्धतियों को प्राप्त हो रहा है उनकी तुलना में हमारे पास पहुँचने वाले प्रकाश का अंश बहुत न्यून है।

अब तो स्थिति यह हो गई है कि यह न्यूनता न्यूनतम नज़र आ रही है, कहने को तो कोई कुछ भी कह ले परन्तु आज की सच्चाई यही है और इसी प्रकाश की तलाश में हम सब इधर–उधर भटक रहे हैं, कुछ लोग इसे हमारी मृगतृष्णा का नाम दे रहे हैं जबकि मृगतृष्णा में भटकाव होता है और हमारा प्रयास वास्तविकता की तरफ़ है।

प्रकाश को पाने के लिये वैचारिक मजबूती की आवश्यकता है जो शनै–शनै हमारे साथियों के मन से निरन्तर कमज़ोर होती जा रही है, हमें भटकाव से मुक्ति पा कर अपना मन उद्देश्य की तरफ़ केन्द्रित करना है इसी से सफलता निश्चित है। भटकाव उन्हीं को होता है जिनके मन स्थिर नहीं होते हैं, यदि हम यह स्वीकार कर लें कि जो सर्वस्वीकार्य है उसी रास्ते पर चलेंगे तो निराशा और भटकाव दूर–दूर तक नहीं आयेंगे, चूँकि प्रकाश कभी भी भेद–भाव नहीं करता, अमीरों के महलों से लेकर गरीबों की कुटिया तक समान रुप से पहुँचता है, अब यह अपना–अपना भाग्य है कि कौन कितना ले पाता है, अभी तक यह अटल सत्य है कि सूर्य पूर्व में ही निकलता है और अस्त पश्चिम में ही होता है, जो पूर्व के सूरज से प्रकाश की अपेक्षा करता है उसे प्रकाश कभी निराश नहीं करता और जो दक्षिण से प्रकाश की अपेक्षा करता है तो उसे तब तक प्रतीक्षा करनी होती है जब तक सूर्य दक्षिणायण नहीं होता।

इलेक्ट्रो होम्योपैथी का सूरज वर्षों से चमक रहा है यह अलग बात है कि उसका प्रकाश अभी जन–जन तक नहीं पहुँचा परन्तु यदि सकारात्मक प्रयास निरन्तर होते रहते हैं तो यह प्रकाश जन–जन तक भी पहुँचेगा, हमारी सोच सार्थक और सकारात्मक होनी चाहिये, मन मे बैठे अंधेरे को दूर कर ज्ञान रुपी दीपक जलायें स्वंय प्रकाशमान हों एवं दूसरों को भी प्रकाशित करें।

जीवन में निराशा के लिये कोई रिक्त स्थान नहीं होना चाहिये सदैव उत्साह व ऊर्जा भरी सोच हो, आप उन लोगों से अलग हों जो कहते हैं कि तुम्हें ज़िन्दगी के उजाले मुबारक, अंधेरे हमें आज रास आ गये हैं, यह उनका फलसफा हो सकता है जो अपने कार्यों से मायूस हैं और इस कदर निराश–हताश हो चुके हैं कि जिस स्थिति में हैं उसे ही नियति मान चुके हैं, परन्तु आज जो परिस्थितियां हमें दृष्टिगोचर हो रही हैं वह कुछ अलग ही कहानी कह रही हैं।

आज हमारे सभी साथी प्रकाश की तलाश में लगे हैं यह अलग बात है कि वह किस तरह का प्रकाश तलाश रहे हैं, वास्तविक प्रकाश या आभासी प्रकाश, प्रकाश कोई भी हो पर वह अपनी गति नहीं बदलता वास्तविक प्रकाश में भी छाया बनती है और आभासी में भी, यह अलग बात है कि एक बिम्ब कहलाता है और दूसरा प्रतिबिम्ब, अब यह हमारा दायित्व है कि हम इतने सतर्क रहें कि बिम्ब को मूक प्रतिबिम्ब छलने न पाये।

वर्तमान समय में इलेक्ट्रो होम्योपैथी में हर जगह छलावा सा नज़र आ रहा है ! कौन क्या कहता है ?क्या करता है ? इसपर कोई भरोसा नहीं है, लोग अपने ही दायरे तोड़ रहे हैं, अपने आपको स्थापित करने के मोह में यदि इलेक्ट्रो होम्योपैथिक बलि चढ़ जाये तो भी कोई गुरेज़ नहीं है यह प्रचलन इतनी तेज़ी से बढ़ा है कि लोग एक दूसरे की नकल करने लगे हैं, इस नकल से उनको क्या लाभ है ?यह तो नकल करने वाले ही जांने, हर एक चीज़ की एक सीमा होती है इसलिये कभी न कभी इसकी भी सीमा समाप्त होगी।

हमारा प्रयास है कि वर्तमान में जो प्रयास चल रहे हैं उसमें पारदर्शिता,प्रमाणिकता और स्थायित्व का समावेश हो और इस प्रकाश पर्व पर सबको इतना प्रकाश मिले कि खुशी हो।

बेचारगी में फंसी इलेक्ट्रो होम्योपैथी

शब्द बेचारा इतना निम्न स्तर का माना जाता है कि जहाँ कहीं भी बेचारा शब्द का प्रयोग हो जाता है वहीं पर जिस संदर्भ में इस शब्द का प्रयोग किया गया होता है उस संदर्भ का महत्व स्वतः ही कम हो जाता है।

इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिये यह शब्द कहीं से भी उचित नहीं है परन्तु जिस तरह की परिस्थितियां निरन्तर निर्मित हो रही हैं वह बेचारा जैसा दृश्य ही उपस्थित कर रही हैं, सबकुछ होने के उपरान्त भी यदि बेचारगी नज़र आये तो उसके विषय में शब्द ही ढूँढे नहीं मिलते, पूर्व से लेकर आज तक यदि हम इलेक्ट्रो होम्योपैथी का सिंहावलोकन करें तो हमें इलेक्ट्रो होम्योपैथी कहीं भी कमज़ोर नहीं दिखाई पड़ेगी, अपने उद्भवकाल से लेकर आज तक विकास की जो सीढ़ियां इलेक्ट्रो होम्योपैथी ने चढ़ी हैं कदाचित असमान्य परिस्थितियों में वह कभी सम्भव नहीं था।

जब तमाम सारे वैज्ञानिक मानवता की सेवा के लिये ऐलोपैथी का विकल्प ढूँढ रहे थे उस समय भी इलेक्ट्रो होम्योपैथी एक अलग पहचान के साथ उपस्थित हुई, जो लोग यह कहते हैं कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी एक रहस्यमयी पद्धति है शायद वह महात्मा मैटी के उन सिद्धान्तों का रहस्य समझ ही नहीं पाये जिसको वह दुनिया को समझाना चाहते थे, मैटी की दुनिया में न तो कोई रहस्य है और न ही कोई तिलस्म जो कुछ भी है दर्पण की तरह साफ एवं स्पष्ट ! जब तक मैटी जीवित रहे उनहोंने निरन्तर इस पैथी के विकास के लिये कार्य किये, मैटी धन्यवाद के पात्र इसलिये भी हैं क्योंकि जब मैटी ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी को प्रतिपादित किया उस समय डा0 सैम्युएल हैनिमन द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों के आधार पर हाम्योपैथी चिकित्सा पद्धति की चमक ज़ोरों पर थी, हर तरफ़ होम्योपैथी की ही चर्चा हुआ करती थी, ऐसा नहीं है कि मैटी जी इससे प्रभावित नहीं हुये परन्तु मैटी पर जो प्रभाव पड़ा वह यह था कि उस समय की होम्योपैथी अपने आप में पूर्ण नहीं थी, जब लोग ऐलोपैथी का विकल्प ढूँढ रहे थे तब मैटी ने होम्योपैथी के समानान्तर इलेक्ट्रो होम्योपैथी को लाकर खड़ा कर दिया ! वही रुप, वही रंग, बदला बदला सा अगर कुछ था तो वह था दवा बनाने का ढंग परन्तु जैसा कि प्रकृति का नियम है कि शक्तिवान से टक्कर लेने में कुछ समय तो लगता ही है।

हैनीमन के समर्थक और साथी इतने मज़बूत थे कि उन्होंने होम्योपैथी को कमज़ोर नहीं होने दिया इधर मैटी के पास कोई वारिस नहीं था, वेन्ट्रोली मैटी के नाम पर जो मैटी का उत्तराधिकारी था वह इतना सक्षम और समर्पित नहीं था इसके पीछे जो कारण उभर कर आते हैं वह यह संकेत देते हैं कि सम्भवतः वेन्ट्रोली मैटी की पृष्ठभूमि चिकित्सा जगत से नहीं थी और न ही उनके अन्दर चिकित्सा विधा सीखने की कोई जिज्ञासा, तभी तो उन्होंने मैटी की विरासत मैटी के अनुनायियों को सौंप दी, यह तो इलेक्ट्रो होम्योपैथी की योग्यता थी जो उसने अपनी चमक नहीं खोई, जब भी कोई अवसर प्राप्त हुआ इस चिकित्सा पद्धति ने अपनी उपयोगिता और प्रमाणिकता दोनों ही सिद्ध की।

अनेकों विसंगतियों के उपरान्त भी इलेक्ट्रो होम्योपैथी खोई नहीं वरन इसका जादू लोगों के सर पर बोलता रहा और इसी प्रभाव के बल पर यह चिकित्सा पद्धति भारतवर्ष में अपने आपको स्थापित करने में सफल हुई, जिस समय इस चिकित्सा पद्धति का भारत में प्रवेश हुआ था उस समय का भारत आज का भारत नहीं था, अखण्ड भारत जिसमें पाकिस्तान, बांगलादेश सहित नेपाल, सीलोन (अब श्रीलंका), बर्मा (अब म्यांमार), भूटान एवं मालद्वीप सहित बहुत सारे युरोपीय देशों में इस पद्धति की अपनी धमक सुनाई पड़ती थी।

इतनी सक्षम और प्रभावी पद्धति आज भारत में बेचारगी की सी स्थिति में है यह बात सुनने में एवं देखने में कष्ट देती है परेशानियां कितनी भी आई हों परन्तु इलेक्ट्रो होम्योपैथी कभी भी इतनी हताश और निराश नहीं दिखी जितनी की आजकल दिखाई पड़ रही है, यदि हम गुज़रे 10 वर्षों का आंकलन करें तो सर्वाधिक परिवर्तन इन्हीं 10 वर्षों में हुआ है, चाहे वह चिकित्सा का क्षेत्र हो, शिक्षा का क्षेत्र हो या फिर अधिकारों के प्रति जागरुकता का क्षेत्र हो,सभी क्षेत्रों में अभूतपूर्व परिवर्तन आया है, आन्दोलन में भी आमूल–चूल परिवर्तन हो चुका है, जिन हाथों में नेतृत्व था उनसे फिसलकर यह आन्दोलन ऐसे लोगों के पास चला गया जिन्होंने आन्दोलन तो किया परन्तु न तो आन्दोलन को धार दे सके और न ही आन्दोलन को कोई दिशा। दिशाहीन आन्दोलन की गति कभी भी स्थिर नहीं रहती जिससे कि जो वातावरण निर्मित होता है वह अनुत्साह को जन्म देता है, कमोबेश इलेक्ट्रो होम्योपैथी आज इसी स्थिति से गुज़र रही है 05–05–2010 को भारत सरकार ने जब इलेक्ट्रो होम्योपैथी के संचालन के लिये स्पष्टीकरण दिया व 21 जून, 2011 को भारत सरकार द्वारा इलेक्ट्रो होम्योपैथी के चिकित्सा, शिक्षा एवं अनुसंधान के लिये दिशा निर्देश जारी कर सोये इलेक्ट्रो होम्योपैथी के नेतृत्वकर्ताओं में एक नया जोश भर दिया।

2004 से 2012 तक की इलेक्ट्रो होम्योपैथी की अघोषित बन्दी ने तत्कालीन इलेक्ट्रो होम्योपैथी के संचालकों को मानसिक रुप से काफी जर्जर कर दिया जिसका लाभ दूसरे पंक्ति के नेताओं ने उठाया, दूसरे पंक्ति के नेता अपने साथियों के मन में यह बिठाने में सफल हो गये कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी का भला उनके द्वारा ही होगा इसलिये लोगों का जुड़ाव ऐसे लोगों से हुआ, इन नवोदित नेताओं ने पुरानी पीढ़ी के नेताओं को इतना बदनाम किया कि लोगों के मन में उनके प्रति श्रद्धा का भाव भी नहीं रहा।

धीरे–धीरे आन्दोलन का स्वरुप बदलता गया या यह कहें कि धीरे–धीरे यह आन्दोलन बदरंग सा हो गया, इसका बहुत कुछ श्रेय हमारे पुराने साथियों को भी जाता है जो इस परिवर्तन का प्रतिरोध नहीं कर सके, उन्होंने अपने आप को इतना थका, हारा व नाकारा मान लिया था कि शान्त रहना ही उचित समझा। शायद यही कारण था कि लोगों ने इसे आत्म समर्पण जैसा समझा जिसका भरपूर लाभ हमारे नये साथियों ने लिया और मन माने ढंग से आन्दोलन को चलाया, ऐसा नहीं है कि इन साथियों ने सब कुछ उलटा–सीधा ही किया हो इन्होंने जो कुछ भी किया उसमें अधकचरे पन के दर्शन होते हैं और जो कुछ भी चिकित्सकों को बताया गया वह कुछ ऐसा था कि अब कुछ मिलने ही वाला है।

खोना और पाना हमारे कार्यों और प्रयासों पर निर्भर करता है हमें कब क्या मिलेगा यह सरकार की व्यवस्थाओं पर निर्भर करता है व्यवस्थाओं में हम परिवर्तन तो नहीं कर सकते लेकिन व्यवस्थाओं की पूर्ति में सहयोग अवश्य कर सकते हैं इसलिये जो भी परिस्थितियां हैं हमें उनका सामना करना है और यह प्रयास भी करना है कि प्रयासों से परिस्थितियों को अपने अनुकूल करें, यह निश्चित मान लें कि प्रतिकूलता अब नहीं आयेगी समय की प्रतीक्षा करें और बेचारगी से दूर रहें। दीपावली के इस पर्व पर खुशियां हमारे घर आयें।

क़तरा , क़तरा – रोशनी

रोशनी की इच्छा हर जीवधारी को होती है प्राणी जगत और वनस्पति जगत दोनों ही क्षेत्रों में प्रकाश की महती आवश्यकता होती है क्योंकि बिना प्रकाश के जीवन सम्भव नहीं है, अन्धकार और प्रकाश दोनों का अपना अलग–अलग स्थान है परन्तु जो आवश्यकता प्रकाश की है उसकी तुलना में अन्धकार उतना महत्व नहीं रखता, जीवधारी तो प्रकाश से जीवन पाते ही हैं परन्तु पेड़– पौधे तो पूर्ण रुप से प्रकाश पर ही आश्रित हैं, प्रकाश ही उनके जीवन का स्रोत है, जो हरियाली हमारे मन को भाती है वह क्लोरोफिल प्रकाश से ही निर्मित होता है, शैवाल और कवक के निर्माण में प्रकाश का अपना अलग महत्व है, अनेकों ऐसे पौधे हैं जिनकी वृद्धि और विकास उसी तरफ होता है जिधर से प्रकाश प्राप्त होता है, दूसरे शब्दों में प्रकाश ऊर्जा का स्रोत है और इसी ऊर्जा को संग्रहित करके रोशनी बनती है इसका साधारण सा उदाहरण है सोलर सिस्टम।

विश्व के लगभग सभी देशों में बिजली की निरन्तर माँग को देखते हुये वैज्ञानिकों ने सौर ऊर्जा के माध्यम से प्रकाश की उपलब्धता की है, बहुत सारे ऐसे उपकरण हैं जो प्रकाश से ही संचालित होते हैं, मानव शरीर को भी प्रकाश रुपी ऊर्जा की अति आवश्यकता होती है बढ़ते हुये शहरीकरण के कारण मनुष्य ने बहुखण्डीय आवासीय व्यवस्था की कल्पना की और उसे मूर्त रुप भी दिया।

विकास तो हुआ जगह की समस्या का समाधान भी हुआ परन्तु एक महत्वपूर्ण कमी भी आई अंधाधुन्ध शहरीकरण व उच्च अट्टालिकाओं के कारण हर आवासीय क्षेत्र में प्रकाश की किरणें नहीं पहुँच पाती हैं, इस प्रकाश की अनुपलब्धता के कारण मानव शरीर में बहुत सारी व्याधियां जन्म ले रही हैं, महिलाओं में "विटामिन डी" की कमी बहुतायत से पाई जाने लगी है, बच्चों में मन्दबुद्धि की बीमारी फैल रही है, इसी प्रकाश की ही कमी से कुपोषण की समस्या सामने आ रही है, बहुत दिनों तक अन्धकार का साथ देने से पुरुषों में डिमेन्शिया (एक प्रकार के भूलने की बीमारी) जैसे रोग की वृद्धि हो रही है जिससे कि जीवन में नीरसता पैदा होती है।

इलेक्ट्रो होम्योपैथी में प्रकाश की आवश्यकता क्यों है ?इस विषय पर विमर्श होना चाहिये इलेक्ट्रो होम्योपैथी में प्रकाश से तात्पर्य ज्ञान का प्रकाश है, जागरुकता का प्रकाश है,जब तक ज्ञान और जागरुकता का विकास नहीं होता तब तक सम्पूर्ण विकास की कल्पना भी कल्पना के रुप में धरी की धरी रह जाती है।

अब तक इलेक्ट्रो होम्योपैथी में विकास की जितनी भी योजनायें बनाई गयी हैं वे सफल क्यों नहीं हो पाती हैं ?ऐसे कौन से कारक हैं जो इन योजनाओं को आकार लेने से पूर्व ही धूल–धूसिरित कर देते हैं, कहने को तो यह अटपटा सा लगता है परन्तु यदि वास्तविक दृष्टि से इसे देखा जाये तो अभी तक यह एक अनुत्तरित प्रश्न है।

यक्ष के प्रश्नों के भी उत्तर युधिष्ठिर ने दिये थे इसलिये जो लोग ऐसे विचारों को अनुत्तरित मानते हैं उन्हें अपनी मानसिकता में परिवर्तन लाना चाहिये, इलेक्ट्रो होम्योपैथी का क्षेत्र बहुत बड़ा है, काम करने के अनेकों रास्ते भी हैं, कल भी काम हो रहा था, आज भी काम हो रहा है और कल भी काम होता रहेगा परन्तु काम की गति और उसकी स्वीकारिता दोनों ही विकास के लिये अति आवश्यक हैं यदि इनकी पूर्ति नहीं होती है तो हममें से कोई भी विकास की धारा का आनन्द नहीं उठा सकेगा।

वर्तमान में जितने लोग भी इलेक्ट्रो होम्योपैथी के आन्दोलन से जुड़े हैं उन सबका एक ही लक्ष्य और एक ही उद्देश्य है कि ऐन–केन प्रकारेण इलेक्ट्रो होम्योपैथी को शासकीय संरक्षण प्राप्त हो और हमारी इस प्यारी चिकित्सा पद्धति को जनता के बीच वही प्यार व दुलार प्राप्त हो जो अन्य मान्यता प्राप्त पद्धतियों को प्राप्त है, इससे हमारे चिकित्सकों में एक नया उत्साह पैदा होगा और जो

कुछ भी कर गुजरने की इच्छा उनके मन में हिलोरें ले रही है उसे वे पूरा कर सकेंगे, तमाम विकास के उपरान्त भी समाज के बुद्धजीवी व तार्किक व्यक्तित्व वाले व्यक्ति हमारी उपेक्षा न कर सकेंगे और जो आज हमारे दावों का मज़ाक उड़ाते हैं कल वही आपके समर्थक होंगे और सशक्त इलेक्ट्रो होम्योपैथी, समर्थ इलेक्ट्रो होम्योपैथी का सपना भी पूरा हो सकेगा।

आज से कुछ वर्ष पहले भले ही इस तरह के सपने देखने वालों को मूर्ख या सनकी समझा जाता था और इस तरह के सपने दिखाने वालों को लोग पाखण्डी के रुप में प्रचारित करते थे लेकिन परिवर्तन की बयार ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी को जो छुआ तो धीरे–धीरे सब कुछ बदलने लगा 28 फरवरी, 2017 को भारत सरकार ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी को जो सौगात दी है उसे सहेजना हमारा काम है, सरकार ने हमें पूरे 10 महीनों का लम्बा समय दिया है इस समयावधि में जो सरकार को अपेक्षित है उसकी प्रपूर्ति हमें करनी होगी लेकिन हमारे साथी जिस तरह से इस प्रपूर्ति की पूर्ति कर रहे हैं कभी–कभी तो ऐसा लगने लगता है कि शायद हर कोई हड़बड़ी में है।

मार्च 2017 के कालखण्ड में जो कुछ भी घटित हुआ उससे हमें प्रेरणा लेनी चाहिये थी लेकिन शायद समय के उस संकेत को हम समझ नहीं पा रहे हैं, माननीया मंत्री जी का बयान जोकि असमय आया उसने एक बार पूरे देश को झकझोर के रख दिया लगभग सभी नेता हतप्रभ से हो गये, चिकित्सकों में हताशा सी व्याप्त होने लगी थी लेकिन जो लोग समय के साथ चलते हैं और हर कार्य वातावरण और काल के अनुकूल करते हैं वे प्रतिकूल परिस्थितियों को भी समय आने पर अनुकूल बना लेते हैं, इस कार्य के लिये निश्चित रुप से बधाई के पात्र हैं बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन,उ0प्र0 के वे अधिकारी जिन्होंने सूझ–बूझ का परिचय देते हुये जागरुकता की एक ऐसी रणनीति तैयार की जिससे उत्तर प्रदेश ही नहीं अपितु पूरे देश का वातावरण बदल गया है, ताबड़– तोड़ प्रेस वार्ताओं व आक्रामक नीति के चलते हमारे चिकित्सिकों का न केवल खोया हुआ आत्म विश्वास वापस आया है अपितु हमारे जो साथी संघर्षरत थे उनके अन्दर भी आशा का संचार हुआ है, दबे स्वर से ही सही अब लोग यह मानने लगे हैं कि इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया (इहमाई) अपने अकेले बलबूते इलेक्ट्रो होम्योपैथी को शासकीय मान्यता का मार्ग प्रशस्त करेगी और सबके सपने पूरे होंगे, हम जो आज क़तरा–क़तरा रोशनी पा रहे हैं वह तिमिर को हटाकर एक प्रकाश पुंज की तरह दैदीप्यमान होगी।

कभी भी निराशा को अपने ऊपर शासन मत करने दीजिये और ऐसे लोगों से भी दूर रहिये जो निराशा का वातावरण पैदा करते हैं, हमारे कुछ साथी आज भी यह कहते हैं कि कुछ नहीं होना, ऐसे निराश लोगों को हम जीवन देने की प्रतिबद्धता से पीछे नहीं हट रहे हैं जो लोग यह कह रहे हैं कि जो संगठन निरन्तर आगे बढ़ रहा है वह बाकी बचे हुये लोगों का अस्तित्व समाप्त कर देगा उनकी यह कल्पना निराधार है।

हमें यह कभी नहीं भूलना चाहिये कि पहचान कभी नहीं मिटती, गंगा और यमुना के गोद में समाई सरस्वती दिखाई भले ही न देती हो परन्तु जब संगम की चर्चा होती है तो गंगा और यमुना के साथ सरस्वती का नाम भी सम्मान से लिया जाता है, हम यह क्यों भूल जाते हैं कि सब कहीं न कहीं एक जगह ही विलीन होते हैं, गंगा, जमुना, सरस्वती, कावेरी, नर्मदा,गोदावरी, सरयू, गंडक, छोटी बड़ी सारी नदियां समुद्र से जा मिलती हैं लेकिन अपनी पहचान नहीं खोतीं, जिस दिन हम यह विचार आत्मसात कर लेंगे उस दिन किसी को कोई परेशानी नहीं होगी इलेक्ट्रो होम्योपैथी सागर के समान है जिससे निकली हुई धारायें हैं, हर प्रदेश के इलेक्ट्रो होम्यो–पैथिक के संगठन और उनके साथी, आज इलेक्ट्रो होम्योपैथी को स्थापित करने के लिये हमें उतनी मेहनत नहीं करनी है जितनी की मेहनत उसे प्रमाणित करने की है।

आप गम्भीरता से चिन्तन करें तो 28 फरवरी, 2017 को भारत सरकार द्वारा नियमितिकरण हेतु प्रेषित पत्र इलेक्ट्रो होम्योपैथी की स्थापना की स्पष्ट स्वीकृति है, अब सरकार यह चाहती है कि जो इसके संचालकगण हैं वे इसका प्रमाणीकरण करें, आन्दोलन की दिशा सही दिशा में होनी चाहिये दीपावली के इस पावन पर्व पर राम के विजय पर चिन्तन करें कि राम ने वनगमन के बाद दक्षिण की दिशा ही क्यों चुनी ? यह चिन्तन हमें सारे प्रश्नों का उत्तर दे देगा और निश्चित रुप से आने वाला वर्ष इलेक्ट्रो होम्योपैथी में वर्षों से जमें अंधियारे को दूर करेगा और वर्षों के बाद एक स्थायी खुशी हम सबके द्वार होगी यह न तो कल्पना है और न ही अति आत्मविश्वास जो कुछ आज दिख रहा है कल आपको भी दिखेगा। इसी मंगल कामना के साथ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया व बोर्ड ऑफ मेडिसिन, उ0प्र0 की ओर से सभी साथियों को

'शुभ दीपावली।'

1– डा0 प्रमोद शंकर बाजपेई फिरोजाबाद में प्रेस वर्ता करते हुए। 2 एवं 3 में उपस्थित इलेक्ट्रोहोम्योपैथ। 4– डा0 बलवीर सिंह अपने विचार देते हुए — छाया गजट

(सम्बंधित समाचार पेज 4 पर देखें)

संघर्ष रंग ला रहा है – डा0 प्रमोद बाजपेई

इलेक्ट्रो होम्योपैथी के द्वारा किया जा रहा संघर्ष धीरे–धीरे रंग ला रहा है हमारे साथी केवल संघर्ष ही नहीं कर रहे हैं बल्कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी की औषधियों के द्वारा चिकित्सा व्यवसाय कर रहे हैं,मानवता की सेवा भी कर रहे हैं पर लगातार सरकार की ढुलमुल नीतियों के कारण इलेक्ट्रो होम्योपैथी को अभी तक वह स्थान प्राप्त नहीं हो सका है जो प्राप्त होना चाहिये यह विचार इलेक्ट्रो होम्योपैथी की वर्तमान स्थिति पर चर्चा हेतु फिरोजाबाद में आयोजित पत्रकार वार्ता में बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 के प्रवक्ता डा0 प्रमोद शंकर बाजपेयी ने व्यक्त किये, बाजपेई ने कहा कि एक बार सरकार पुनः सक्रिय हुई है और इलेक्ट्रो होम्योपैथी के रिगुलेशन के लिए लोगों से प्रपोज़ल मांगे हैं 30 दिसम्बर तक प्रपोज़ल भेजने की अन्तिम तिथि निर्धारित कर दी है, इस अन्तिम तिथि के बाद सरकार एक कमेटी गठित करेगी जो प्रपोज़लों का निरीक्षण कर अन्तिम निर्णय ले लेगी। डा0 बाजपेयी ने मांग की कि सरकार को जो भी करना हो शीघ्र करे कमेटियों का जाल अब हमें स्वीकार नहीं है जो भी निर्णय लेना हो निर्णय ले लें लाखों चिकित्सकों के भविष्य को बहुत दिनों तक लटकाया नहीं जाना चाहिये।

इस प्रेस वार्ता में डा0 शिवकुमार पाल, डा0 नरेन्द्र भूषण निगम, डा0 अशोक कुमार, डा0 बलवीर सिहं, डा0 सलीम अहमद, डा0 इश्तेयाक आदि प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

इसी क्रम में हाथरस जनपद के सादाबाद में इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया द्वारा इलेक्ट्रो होम्योपैथी के चिकित्सकों की एक जनपद स्तरीय बैठक आयोजित की गयी जिसकी अध्यक्षता डा0 रमेश चन्द्र उपाध्याय ने की, कार्यक्रम का प्रारम्भ मैटी के चित्र पर माल्यार्पण व दीप प्रज्जवलन मुख्य अतिथि डा0 प्रमोद शंकर बाजपेयी द्वारा किया गया, इस अवसर पर विभिन्न वक्ताओं ने इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सकों की समस्याओं पर चर्चा की कार्यक्रम के संयोजक डा0 नेम सिंह ने चिकित्सकों के मुख्य चिकित्साधिकारी कार्यालय में पंजीयन न होने की बात उठायी, डा0 हरेन्द्र सिहं ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी के चिकित्सकों की एकता की बात करते हुए कहा कि अब समय आ गया है कि सब लोग एक हो जाओ और पैथी हित की बात करो।

कार्यक्रम में जोश भरते हुए डा0 मौलीश्री बघेल ने कहा कि डरने की कोई बात नहीं है आपको चिकित्सा करने का पूरा अधिकार है, उन्होंने ज़ोरदार शब्दों में कहा कि किस तरह से मुख्य चिकित्साधिकारी कार्यालय ने उन्हें प्रताड़ित किया जिनका उन्होंने मुकाबला किया कि आज खुलकर प्रैक्टिस कर रही हूँ दूसरी महिला वक्ता डा0 सुनीता सिंह ने कहा कि हमें पूरा भरोसा है कि आने वाले दिन अच्छे होंगे, अध्यक्षता कर रहे डा0 रमेश चन्द्र उपाध्याय ने कहा कि आज हमें पुराने दिन याद आ रहे हैं जब सादाबाद में एक–एक बैच में 100–150 बच्चे रहते थे और ऐसा लगता था कि कोई मेडिकल कालेज चल रहा है। एक बार उम्मीद फिर बंधी है मैं बधाई देता हूँ डा0 प्रमोद शंकर बाजपेयी को जो अपने व्यस्ततम कार्यक्रम के उपरान्त भी यहां आये।

कार्यक्रम का संचालन डा0 बहादुर अली ने किया।

सादाबाद जिला हाथरस में गोष्ठी करते हुये बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 के प्रवक्ता डा0 प्रमोद शंकर बाजपेई उनके बायें डा0 नेम सिंह बघेल एवं डा0 रमेश चन्द्र उपाध्याय – छाया गज़ट

कार्य ही रेगुलेशन का ...... प्रथम पेज से आगे

लाभ हो उसके शरीर पर इलेक्ट्रो होम्योपैथिक औषधियों का कोई प्रतिकूल प्रभाव न पड़े तभी तो सुरक्षा की बात सच साबित होगी।

दूसरा बिन्दु है viavlity अर्थात उपयोगिता। उपयोगिता सिद्ध करने के लिये भी हमारे कार्यों का मूल्यांकन हो जो दावे किये जाते हैं कि साध्य और असाध्य दोनों तरह के रोगों पर इलेक्ट्रो होम्योपैथिक औषधियां प्रभावी हैं और इनका प्रभाव तात्कालिक के साथ–साथ स्थायी और दूरगामी भी होता है परन्तु आज तक का इतिहास है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति लगातार उपेक्षा का शिकार होती रही है, अब भारत सरकार ने एक बार फिर से यही बात दोहरायी है अब सरकार के सामने दो ही विकल्प हैं या तो वह हमारे दावों को स्वीकार करे या फिर ऐसे किसी प्राधिकरण का गठन करे जो हमारे कार्यों का मूल्यांकन कर सके अब यह सरकार पर निर्भर करता है कि

जलाओ एक दिया देश के नाम

आपके अधिकारों की लड़ाई लड़ने वाला एक मात्र संगठन

दीपावली की हार्दिक शुभकामनायें

Electro Homoeopathic Medical Association of India

(An Organization of Electro Homoeopathic Practitioners & Institutions)

Recognised by Government of India Ministry of Heath & Family Welfare vide order No: C.30011/22/2010-HR Dated 21-06-2011

एक स्वायत्तशासी नियामक निकाय

E-mail : ehmaik@gmail.com website- www.behm.org.in

चिकित्सा–विज्ञान और प्रौद्योगिक जगत में सर्वाधिक प्रकाशित होने वाला निष्पक्ष समाचार पत्र

दीपावली की हार्दिक शुभकामनायें

इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट